"उत्तराखंड की शहरी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता: देहरादून जिले के सन्दर्भ में एक अध्ययन"

रजनी श्रीकोटी
शोध विद्यार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग,
एस.जी.आर.आर. विश्वविद्यालय,
देहरादून - 248001 (उत्तराखंड)

डॉ. प्रीति तिवारी
पर्यवेक्षक
सह - प्राध्यापक
राजनीति विज्ञान विभाग,
एस.जी.आर.आर. विश्वविद्यालय,
देहरादून - 248001 (उत्तराखंड)

सारांश: प्रस्तुत शोध देहरादून जिले में शहरी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता के कुछ आयामों को अपनाकर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। कामकाज में लोगों की भागीदारी लोकतंत्र की सफलता के लिए सरकार की मूलभूत आवश्यकता है।यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति विशेष की भागीदारी कितनी है और राजनीति में विभिन्न समूह उनकी 'जागरूकता' के स्तर पर निर्भर करते हैं। अतः राजनीति भागीदारी के प्रति जागरूकता आवश्यक है| राजनीतिक जागरूकता को मोटे तौर पर उस ज्ञान और जानकारी के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक व्यक्ति के पास प्रकृति के बारे में होता है, उस राजनीतिक व्यवस्था की संरचनाएँ, कार्य, गतिविधियाँ और समस्याएँ जिसमें एक व्यक्ति रहता है। संवैधानिक होते हुए भी लैंगिक समानता और अन्य राजनीतिक अधिकारों के प्रावधानों के तहत बहुत कम संख्या में महिलाएं ही जगह बना पाई हैं| राजनीतिक चेतना की कमी के कारण स्वयं निर्णय लेने की प्रक्रिया में बहुत पीछे।महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए गए हैं| महिलाओं की समान राजनीतिक भागीदारी को लेकर कई संवैधानिक प्रावधान हैं।

शहरों में, अध्ययन से पता चलता है कि ज्यादातर मामलों में महिलाओं की राजनीतिक

भागीदारी और जागरूकता बहुत कम है। राजनीतिक जागरूकता और सामाजिक, आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी के बिना महिला सशक्तिकरण अधूरा है| इस शोध का उद्देश्य विशेष संदर्भ में शहरी महिलाओं के बीच राजनीतिक जागरूकता के स्वरूप का विश्लेषण करना है राज्य की राजनीतिक संस्थाओं के साथ-साथ स्थानीय स्वशासन में उनकी भागीदारी के बारे में उनकी जानकारी अन्य निर्णय लेने वाली संरचनाएँ। यह शोध राजनीतिक को मजबूत करने में राजनीतिक जागरूकता की भूमिका की भी जांच करता है|

राजनीति में जागरूकता, भागीदारी और महिलाओं का सशक्तिकरण। यह अध्ययन विशेष रूप देहरादून के दो ब्लॉक (शहरी) तक ही सीमित है|

कुंजी शब्द – राजनीतिक जागरूकता, शहरी महिलाएँ, उत्तराखंड, राजनीतिक भागीदारी, सशक्तिकरण|

परिचय

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" अर्थात जहाँ नारी को समुचित सम्मान मिलता है, वहाँ देवता निवास करते है| महिलाएं किसी राष्ट्र को आगे बढ़ाने और उसे विकास की ओर ले जाने में अहम भूमिका निभाती है | अगर हम राष्ट्र का चौमुखी विकास चाहते है तो महिलाओं को अधिकार देना बहुत आवश्यक है|

एक समय ऐसा था जब महिलाएं किसी भी पुरुष के आगे कहीं नहीं ठहरती थीं, लेकिन समय के साथ महिलाओं ने हर क्षेत्र में ऊंचाइयां हासिल की हैं, चाहे वह खेल हो, राजनीति हो, उद्योग हो, शिक्षा आदि हो। इस बदलते परिदृश्य में प्रमुख कारक सक्रिय रहा है। महिलाओं की भागीदारी, संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों और मौलिक अधिकारों ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और भूमिकाओं में महिलाओं के उभरते मूल्य के लिए रीढ़ की हड्डी के रूप में काम किया है। हालांकि लंबे समय तक पुरुष प्रधान रहे समाज में बराबरी का स्थान दिलाने के लिए हमें अभी और काम करने की जरूरत है।

राज्य आंदोलन, सामाजिक सरोकार में महिलाओं को अग्रणी भूमिका रही है। साथ ही वे मतदान करने में भी महिलाएं पीछे नहीं हैं। चुनाव में वोट देने में पहाड़ की महिलाएं पुरुषों से आगे रही हैं। प्रत्याशियों की हार जीत का फैसला लेने में महिलाओं की बड़ी भूमिका रहती है, लेकिन राजनीति में प्रतिनिधित्व देने पर आधी आबादी सियासी दलों के हाशिए पर रहती हैं। उत्तराखंड राज्य के निर्माण से लेकर उसके विकास में मातृशक्ति की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। इसीलिए राज्य की महिलाओं को यहां रीढ़ कहा जाता है।

सुधीर वर्मा **(1997),** ने अपनी कृति 'वीमेन स्ट्रगल फॉर पॉलिटिक्स स्पेस' में विश्व तथा भारत

में महिलाओं के मताधिकार संघर्ष से लेकर राजनीतिक सहभागिता संघर्ष तक का विश्लेषण किया है | इनके मतानुसार भारत में आरक्षण की व्यवस्था से प्रॉक्सी महिलाओं की संख्या बड़ी है | महिलाओं की मतदाता के रूप में तो राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि हुई है, लेकिन प्रतिनिधि के रूप में नहीं | सुरेन्द्र कुमार शर्मा **(2010),** ने जयपुर नगर की महिलाओं में उनके राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया है | इनके अनुसार वर्तमान समय में नगरीय महिलाएं अपने सभी प्रकार के अधिकारों के प्रति जागरूक होते हुए भी केवल कुछ ही अधिकारों का स्वतंत्र रूप से उपयोग करने में सक्षम हैं | अधिकारों का उपयोग परिस्थितिजन्य कारकों, सामाजिक, राजनीतिक कारणों से प्रभावित होता है | इनके अनुसार महिलाओं के समस्त अधिकारों के पीछे संवैधानिक शक्ति होने के बावजूद भी उन्हें समाज में असमानता व शोषण सहन करना पड़ता है |

हालांकि, एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के विकास में महिलाओं की एक अलग भूमिका होती है क्योंकि वे लगभग आधी आबादी का गठन करती है। इसलिए, उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में निष्क्रिय छोड़ना विवेकपूर्ण नहीं है। आधी आबादी के अज्ञान में रहने से सच्चा विकास नहीं हो सकता। किसी राष्ट्र में मानव संसाधन विकास की किसी भी नीति में महिलाओं का स्थान काफी ऊँचा होता है।

राजनीतिक जागरूकता

राजनीतिक जागरूकता से आशय किसी भी व्यक्ति की राजनीतिक जागरूकता से है जिसे राजनीतिक परिदृश्य के बारे में ज्ञान और जानकारी है। यह राजनीतिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति समझ को प्रदर्शित करता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था व मूल्यों के प्रति चेतना विकसित करते हैं तथा उनमें रुचि लेते हैं। इसके साथ ही व्यक्ति देश में हो रही विभिन्न राजनीतिक घटनाओं तथा परिवर्तन के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित होता है।

जागरुकता का आशय है कि किसी कार्य को समझना, जानना, उसमें भाग लेना या भागीदार होना। राजनीतिक जागरुकता के द्वारा ही समाज का प्रत्येक नागरिक राजनीतिक गतिविधियों में प्रत्यक्ष, परोक्ष, अधिक और कम मात्रा में भाग लेते है, इस भाग लेने की क्रियात्मक विधि को राजनीतिक जागरूकता कहा जाता हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शहरी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन करना।

2. शहरी महिलाओं में राज्य स्तरीय राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन करना।

3. शहरी महिलाओं में स्थानीय स्तर पर राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन करना।

4. शहरी महिलाओं में सामान्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि

देहरादून, भारत के उत्तराखंड राज्य की राजधानी है और इसका मुख्यालय देहरादून नगर में है | यह गढ़वाल मंडल का एक जिला है | देहरादून जिले में 6 तहसीलें, 6 सामुदायिक विकास खंड, 17 कस्बे और 764 बसे हुए गाँव और 18 गैर आबादी वाले गाँव हैं । यह अध्ययन एकत्रित आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित है |

डेटा संग्रह :

यह अध्ययन प्राथमिक और द्वितीय दोनों प्रकार के डेटा से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित हैA प्राथमिक डेटा: प्राथमिक डेटा एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त किया गया है, जिसमें राजनीतिक जागरूकता के सामाजिक और राजनीतिक पहलू शामिल हैA जिसे नमूना उत्तरदाताओं के बीच प्रचारित किया गया था।

यह अध्ययन उत्तराखंड के देहरादून जिले के दो ब्लाक (रायपुर और डोईवाला) शहरी क्षेत्र की महिलाओं पर किया गया हैA देहरादून की महिलाओं का नमूना आकार लिया गया हैA सुविधा नमूनाकरण विधि का उपयोग करके चयनित प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया हैSA

द्वितीय डेटा: द्वितीय डेटा में प्रकाशित पुस्तकों, रिपोर्टों, पत्रिकाओं, अख़बारों आदि का भी उपयोग किया गया है।

उत्तरदाताओं का वर्गीकरण :

क्रम संख्या	देहरादून जिले के ब्लॉक	महिला मतदाता
1	रायपुर (शहरी)	50
2	डोईवाला (शहरी)	50

नमूनाकरण विधि: सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधि का उपयोग करके देहरादून के इन ब्लाक से कुल 100 महिलाओं का यादृच्छिक नमूनाकरण तरीकों से चयन किया गया और इनका

साक्षात्कार लिया गया।इन 100 शहरी क्षेत्र की महिलाओं में, 50 रायपुर और 50 डोईवाला क्षेत्र की महिला मतदाता है|

इस अध्ययन में नमूना आकार देहरादून की 18 से 55 वर्ष से ऊपर तक की 100 शहरी महिलाएं हैं| यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके शहरी महिलाओं से यादृच्छिक नमूने एकत्र किए गए हैं जिसके तहत प्रत्येक नमूने के चुने जाने की समान संभावना है।यह तकनीक सटीक निष्कर्ष निकालने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि नमूने किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से पूरी तरह मुक्त होते हैं और शोधकर्ता को सटीक प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं।

प्रश्नावली सह-साक्षात्कार अनुसूची:

महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का पता लगाने के लिए एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई है| इन क्षेत्रों से प्रश्नावली के आधार पर चयनित महिलाओं का साक्षात्कार लिया गया है। उत्तराखंड के देहरादून जिले की महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता के स्तर को जानने के लिए प्रश्नावली को चार भागों में विभाजित किया गया है, जो कि निम्न प्रकार से है:-

(i) राज्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता,

(ii) स्थानीय स्तर पर राजनीतिक जागरूकता,

(iii) सामान्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता,

(iv) राजनीतिक भागीदारी में जागरूकता,

प्रयुक्त उपकरण:- प्रश्नावली शोधकर्ता द्वारा 16 प्रश्नों की एक प्रश्नावली तैयार की गई है। प्रश्नावली को 4 आयामों में विभाजित किया गया है।प्रत्येक आयाम 4 प्रश्नों से बना है।जो की निम्न प्रकार से है:

तालिका **1.** शहरी महिलाओं में राज्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता

सवाल	प्रतिक्रिया	शहरी	प्रतिशत
1. आप अपने क्षेत्रीय राजनीतिक दल का नाम जानते हैं|	हाँ	28.750	28.75%
	नहीं	71.250	71.25%
2. क्या आपने कभी उत्तराखंड	हाँ	7.000	7%

राज्य के आन्दोलन में भाग लिया था**?**	नहीं	93.000	93%
3. क्या आप जानते हैं कि वर्तमान में उत्तराखंड राज्य में किस पार्टी की सरकार है**?**	हाँ	31.500	31.5%
	नहीं	68.500	68.5%
4. आपके मत में उत्तराखंड राज्य के बन जाने के बाद से गढ़वाल मंडल का विकास तीव्र गति से हुआ है।	हाँ	18.000	18%
	नहीं	82.000	82%

उपरोक्त तालिका 1. के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देहरादून की शहरी महिलाएं अपने क्षेत्रीय राजनीतिक दल का नाम (28.75%) जानती हैं, उत्तराखंड राज्य के आन्दोलन में (7%) शहरी महिलाओं ने भाग लिया था, (31.5%) महिलाएं जानती हैं की वर्तमान में उत्तराखंड राज्य में किस पार्टी की सरकार है**?**, (18%) महिलाएं ही मानती है की उत्तराखंड राज्य के बन जाने के बाद से गढ़वाल मंडल का विकास तीव्र गति से हुआ है।इससे यह स्पष्ट होता है की राज्य स्तर पर देहरादून की शहरी महिलाएं राजनीति में रूचि नहीं लेती है, जिससे उनमें राज्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता का आभाव है|

तालिका **2.** शहरी महिलाओं में स्थानीय स्तर पर राजनीतिक जागरूकता

सवाल	प्रतिक्रिया	शहरी	प्रतिशत
1. आप क्या स्थानीय समुदाय की समस्याओं पर चर्चा करते हैं?	हां	18.000	18%
	नहीं	82.000	82%
2. क्या आप अपने वर्तमान पते पर वोट देने के लिए पंजीकृत हैं, जहाँ आप अभी रहते हैं?	हां	29.500	29.5%
	नहीं	70.500	70.5%
3. आपने अपने क्षेत्र में हुए पिछले ग्राम पंचायत/नगर पालिका चुनाव में मतदान किया था।	हां	30.250	30.25%
	नहीं	69.750	69.75%

4. क्या आप अपने निर्वाचन क्षेत्र के विधायक का नाम जानते हैं?	हां	30.000	30%
	नहीं	70.000	70%

उपरोक्त तालिका 2. के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देहरादून की (18%) शहरी महिलाएं स्थानीय समुदाय की समस्याओं पर चर्चा करती हैं, अपने वर्तमान पते पर वोट देने के लिए (29.5%)_महिलाएं पंजीकृत हैं, (30.25%) शहरी महिलाओं ने अपने क्षेत्र में हुए पिछले ग्राम पंचायत/नगर पालिका चुनाव में मतदान किया था, (30%) महिलाएं अपने निर्वाचन क्षेत्र के विधायक का नाम जानती हैं| इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय स्तर पर शहरी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का स्तर कम है|

तालिका **3.** शहरी महिलाओं में सामान्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता

सवाल	प्रतिक्रिया	शहरी	प्रतिशत
1. क्या आप समाचार पत्र में राजनीति से सम्बन्धित खबरें पढ़ना पसंद करते हैं**?**	हां	20.250	20.25%
	नहीं	79.750	79.75%
2. क्या आप राजनीतिक चर्चाओं में रुचि रखते हैं**?**	हां	15.000	15%
	नहीं	85.000	85%
3. क्या आप अपने राजनीतिक अधिकारों के बारे में जानते हैं**?**	हां	24.000	24%
	नहीं	76.000	76%
4. आप अपने घर में राजनीति से संबंधित निर्णय स्वयं लेती हैं|	हां	20.500	20.5%
	नहीं	79.500	79.5%

उपरोक्त तालिका 3. के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देहरादून की (20.25%) शहरी महिलाएं समाचार पत्र में राजनीति से सम्बन्धित खबरें पढ़ना पसंद करती है, राजनीतिक चर्चाओं में (15%) महिलाएं ही रुचि रखती हैं, (24%) शहरी महिलाएं ही अपने राजनीतिक अधिकारों के बारे में जानती हैं, और (20.5%) महिलाएं घर में राजनीति से संबंधित निर्णय स्वयं लेती है| इससे यह स्पष्ट होता है कि शहर की महिलाएं शिक्षित होने के बावजूद भी इनका राजनीति में सामान्य स्तर पर राजनीतिक जागरूकता का प्रतिशत बहुत कम है, अभी भी ये महिलाएं अपने

घर में स्वयं निर्णय लेने में बहुत पीछे हैं|

तालिका **4.** शहरी महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी में जागरूकता

सवाल	प्रतिक्रिया	शहरी	प्रतिशत
1. आप क्या राजनीतिक पार्टी के प्रचार-प्रसार में भाग लेती हैं?	हां	12.000	12%
	नहीं	88.000	88%
2. क्या आपके परिवार में से कोई राजनीतिक दल का सदस्य या नेता है?	हां	6.250	6.25%
	नहीं	93.750	93.75%
3. आप राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेती हैं|	हां	8.750	8.75%
	नहीं	91.250	91.25%
4. क्या आप चुनाव में अपने मताधिकार का उपयोग करते हैं?	हां	31.500	31.5%
	नहीं	68.500	68.5%

उपरोक्त तालिका 4. के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि देहरादून की (12%) शहरी महिलाएं राजनीतिक पार्टी के प्रचार-प्रसार में भाग लेती हैं, (6.25%) महिलाओं के परिवार में कोई राजनीतिक दल का सदस्य/नेता है, सिर्फ (8.75%) शहरी महिलाएं ही राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेती हैं और (31.5%) शहरी महिलाएं चुनाव में अपने मताधिकार का उपयोग करती हैं| इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी का प्रतिशत बहुत कम है |

निष्कर्ष **:-**

इस शोध का गहराई से अध्ययन करने से पता चलता है कि देहरादून की शहरी महिलाएं बड़ी संख्या में सक्रिय रूप से राजनीति में भाग नहीं ले रही हैं जैसा कि उन्हें आदर्श रूप से करना चाहिए। वर्तमान समय में लैंगिक समानता का प्रश्न तथा समान राजनीतिक अधिकार एवं भागीदारी का विषय विश्व स्तर पर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। विभिन्न शोधों में महिलाओं के प्रति असमानता के व्यवहार, सार्वजनिक जीवन में उनकी सीमित भागीदारी, समाज में विद्यमान पितृसत्तात्मक व्यवस्था के संदर्भ में विवेचित किया गया है। देहरादून की शहरी महिलाएं राज्य और स्थानीय राजनीतिक परिदृश्यों के बारे में अधिक जागरूक नहीं हैं।

इन महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी बहुत कम है| इन शहरी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता की कमी है, जिसके कारण राजनीतिक भागीदारी में उनकी जागरूकता का प्रतिशत बहुत ही कम है| इन महिलाओं की राय के अध्ययन से यह पता चलता है कि काफी महिलाएं राजनीति में भागीदारी करने की इच्छुक तो है पर राजनीति में भागीदारी नहीं कर पाती है| उन्हें अपने राजनीतिक अधिकार, लोकतांत्रिक व्यवस्था और अपने देश के संविधान के बारे में जानकारी तो है परन्तु महिलाएं राजनीतिक गतिविधियों, प्रचार-प्रसार और रैलियों में भाग बहुत कम लेती हैं|

जहां तक बाधाओं का सवाल है तो काफी हद तक आत्मविश्वास की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियां, सहयोग की कमी, प्रचलित परम्पराएँ, पितृसत्तात्मकता और रुढ़िवादीता सोच एक कारण है| आम महिलाओं के लिए सुरक्षा भी राजनीति में शामिल न होने का एक प्रमुख कारण माना गया है ।इन महिलाओं की स्थिति में अनुकूल परिणाम और राजनीति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए सरकार द्वारा ठोस कदम उठाए जाने चाहिए|

संदर्भ सूची

1. https://www.amarujala.com/dehradun/uttarakhand-assembly-election-2022-half-population-women-does-not-have-even-20-percent-representation-in-politics

2. https://www.jagran.com/uttarakhand/dehradun-city-uttarakhand-women-policy-preliminary-draft-prepared-23243590.html

3. राजनीतिक समाजशास्त्र पृष्ठ – 41

4. Verma, Sudhir. (1997). “Women’s Struggle for Political Space.” Jaipur : Rawat Publications.

5. शर्मा, रमेश (मार्च 2011), “महिला सशक्तिकरण अतीत और आज” नवलोक भारत |